

कबीरदास दोहावली | By Varsha Srivastav |

कबीर मन तो एक है
भावे तहाँ लगाव
भावे गुरु की भक्ति करूँ
भावे विषय कमाव कबिरा
भावे विषय कमाव

कबीर मन ही गयंद है
अंकुश दे दे राखूँ
विष की बेलि परिहारो
अमृत का फल चाखूँ कबिरा
अमृत का फल चाखूँ

मन के मते न चलिए
मन के मते अनेक
जो मन पर असवार है
सो साधु कोई एक कबिरा
सो साधु कोई एक

मन के मारे बन गए
बन तजि बस्ती माँहि
कहे कबीर क्या कीजिए
यह मन ठहरै नाही कबिरा
यह मन ठहरै नाही

मन को मारूँ पटक के
टूक-टूक है जाए
विष की क्यारी बोय के
लुणता क्यों पछताए कबिरा
लुणता क्यों पछताए

मन दाता मन लालची
मन राजा मन रंक
जो यह मन गुरु सो मिले
तो गुरु मिले निसंक कबिरा
तो गुरु मिले निसंक

मनवा तो पंछी भया
उड़ के चला आकाश
ऊपर ही ते गिर पड़ा
मन माया के पास कबिरा
मन माया के पास

मन पंछी तब लग उड़े
विषय वासना माँहि
ज्ञान बाज के झपट में
तब लगी आवै नाही कबिरा
तब लगी आवै नाही

मनवा तो फूला फिरे
कहै जो करूँ धरम
कोटि करम सिर पे चढ़े
चेति न देखे मरम कबिरा
चेति न देखे मरम

मन की घाली हूँ गई
मन की घाली जाऊँ
संग जो पड़ी कुसंग के
हटे हाथ बिकाऊ कबिरा
हटे हाथ बिकाऊ

महामंता मन मारिले
घट ही माँहि घेर
जब ही चलाए पीठ दे
अंकुश रह गए टेर कबिरा
अंकुश रह गए टेर

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a4%ac%e0%a5%80%e0%a4%b0%e0%a4%a6%e0%a4%be%e0%a4%b8-%e0%a4%a6%e0%a5%8b%e0%a4%b9%e0%a4%be%e0%a4%b5%e0%a4%b2%e0%a5%80-by-varsha-srivastav/>